Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 4, Issue 2 - 2019

मारवाड़ राजघराने की बहियों में रोग ज्ञात बही।

डॉ. किरण शेखावत*

शोध सार (Abstract)

जोधपुर राजघराने की जनानी डयोढ़ी में निवास करने वाली रानियाँ, माजियाँ, पड़ढायतो और अन्य महिलाओं की तत्कालीन समय में स्वास्थ्य सेवाऐं क्या थी तथा कैसे उनके अस्वस्थ होने पर नीम और वैध जी द्वारा उनकी चिकित्सा की जाती थी। पर्दे में रहने वाली रानियों के बीमार होने पर रानियों के महल में वैध जी स्वयं ने जाकर पर्दे के माध्यम से बात करके या रानी की डावड़ी के द्वारा बताई बातों के आधार पर ही दवाई बनाकर देते थे। पर्दानशी रानियों के हाथों में धागा (सुत का कच्चा धागा) बाधंकर दूसरे छोर पर उस धागे की कम्पन के माध्यम से नाडी को देखते और उसी अनुसार ईलाज किया करते थे। इन राजघरानों की औरतों के क्या बिमारी होती थी तथा उन्हें क्या दवाई दी जाती थी। इस बही से यह भी ज्ञात होता है कि महारानियों के ईलाज हेतु वैध आया करता है। इस बही में प्रतिदिन जनाना महल में होने वाले कार्यो की संक्षिप्त रूपरेखा भी दर्ज की जाती थी, जो जनानी ढोढ़ी की रिपोर्ट के नाम से जानी जाती है। यह रिपोर्ट नाजर व दोढ़ीदार के मार्फत लिखाई जाती थी। साथ ही इससे यह भी जानकारी मिलती है कि उस समय किस रानी को क्या बीमारी थी। बीमारी के ईलाज के लिए कौन से वैध को बुलाया जाता था। केवल बीमार होने पर नही अपितु इन रानियों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए समय–समय इनका रेगुलर चैकअप किया जाता है। ईलाज के दौरान भी जनानी डयोढ़ी के नियम– कायदे व सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाता था। इस बात का भी ध्यान रखा जाता था कि पधारे वैध उचित वेशभूषा व सर का ढककर आये। रानियों की सुरक्षा की दृष्टि से पूरे ईलाज के दौरान नाजर वैध के साथ ही रहते थे।

जोधपुर राजघराने की जनानी ड्योढ़ी में निवास करने वाली रानियॉ, माजीयॉ, पड़दायतो और अन्य महिलाओं की तत्कालीन समय में स्वास्थ्य सेवाएँ क्या थी तथा कैसे उनके अस्वस्थ होने पर नीम और वैद्य जी द्वारा उनकी चिकित्सा की जाती थी। इस सम्बन्ध में पुस्तक प्रकाश में अभिलेखीय स्रोत से यह ज्ञात होता है कि मारवाड़ में 10वीं शताब्दी के उतरार्द्व तक वैध और नीम हकीम ही चिकित्सा का कार्य करते थे अधिकतर वैध नाड़ी देखकर ईलाज किया करते थे। पर्दे में रहने वाली रानियों के बीमार होने पर रानियों के महल में वैध जी स्वंय न जाकर पर्दे के माध्यम से बात करके या रानी की डावड़ी के द्वारा बताई बातो के आधार पर ही दवाई बनाकर

*पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, इण्डियन कौसिल ऑफ सोशल साइस रिसर्च।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

दे देते थे। पर्दानषी रानियो के हाथो में धागा (सुत का कच्चा धागा) बॉधकर दुसरे छोर पर उसे धागे के कम्पन के माध्यम से नाड़ी को देखते और उसी अनुसार ईलाज किया करते थे। जोधपुर राज्य की जनाना महलो में रहने वाली इन रानियों, महारानियों, पड़दायतो को कौन–कौन सी बीमारियॉ होती थी तथा उन्हे क्या दवाई दी जाती थी। इस सम्बन्ध में खोज करने पर मुझे एक बही मिली है जो मेहरानगढ़ स्थित पुस्तक प्रकाष में रखी गयी है। ''महकमां श्री जनान डोढ़ी–नित हकीकत की बही कमांक 2670 जो महाराजा जसवन्त सिंह के समय वि.सं. 1950 के सावण वद 1 से लगाकर 1952 के फाल्गुण सुद 15 तक की जनाना में घटी घटनाओं का ब्यौरा प्रस्तुत करती है।

बही से ज्ञात होता है कि महारानियों के ईलाज हेतु वैध आया करता है। इस बही में प्रतिदिन जनाना महल में होने वाले कार्यो की संक्षिप्त रूपरेखा भी दर्ज की जाती थी। जो जनानी दोढ़ी की रिर्पोट के नाम से जानी जाती थी। यह रिर्पोट नाजर एवं दोढ़ीदार में मार्फत लिखाई जाती थी उक्त बही में कुल 56 पेज है। जिनकी भाषा शैली राजस्थानी है। इस बही के अध्ययन से पता चलता है कि उस समय किस रानी को क्या बीमारी थी, बीमारी के ईलाज के लिए कौन से वैध को बुलाया जाता थ। बही में रानियों की बिमारियों का ब्यौरा इस रूप में मिलता है जैसे :– माजी श्री पॉचवा चवाणंजी के पेट में दर्द, बुखार व कमजोरी है, इसके लिए वह वैध द्वारा दिया गया काढ़ा (धामा) लेने के उदाहरण मिलते है इस तरह श्री लाडी रैवडीजी के बुखार होने पर वैध जी द्वारा ईलाज शुरू किया गया।

बड़ा देवड़ी जी के बुखार होने पर दवा अब्दुल हकीम द्वारा दी जाती थी। पड़दायत तीजरायजी के बुखार है सो दवा वैद अब्दुल हकीम जी ने दि है। श्री भीयाणी जी के बुखार व दस्त लग रहै है उनका ईलाज शुरु कर दिया गया है। राणी जी श्री श्री पंवार जी के बुखार के साथ उल्टीयॉ होने पर दवा दे दि गयी है। माजी श्री बड़ा देवड़ी जी के उल्टीयॉ व दस्त लग रहै है तो ईलाज शुरु कर दिया गया है। माजी श्री आठवां भीयाणी जी के खॉसी होने पर दवा वैध श्री भुरचन्द जी द्वारा दि गयी। महाराणीजी श्री जाड़ेची जी के बुखार होने पर दवा चाणोंद वाला गुरसां ने दि है।

इन रानियों के साथ राजकुमारियों के बिमार होने पर किस तरह वैधों द्वारा उनका ईलाज किया जाता था, उनके क्या बिमारी थी जैसे केसर कंवर बाईजी के मोति जरा है, राजकोर बाईजी के बुखार है।

इस बही में पड़दायतों व पासवानों के नामों का भी उल्लेख किया गया है। जिनका ईलाज विभिन्न वैधों द्वारा किया गया था जैसे पड़दायत मगरासजी, पड़दायत रतनजौत, पड़दायत रामराय जी, पड़दायत तीजराय जी, ओजन रायजी, चंपरायजी, आसरायजी, नवल रायजी, हुलेरायजी, आदी।

इस बही के अध्ययन से पता चलता है कि सभी रानियों के अपने निजी (Personal) वैध होते थे जिनसे वह अपना ईलाज करवाती थे। उदाहरण के तौर पर राणी श्री लाडी भटियाणीजी के अस्वस्थ होने पर हमेषा निबांज वाले वैध अबदुल हकीम जी ही इनका ईलाज करते थे। इस मांजी श्री आठवां भटियाणीजी के बीमार होने पर उनका ईलाज सदैव ही वैध भूरचन्दजी द्वारा और रानी श्री जाड़ेची जी के बीमार होने पर उनका ईलाज चाणोंद वाले गुरसां वैध जी द्वारा ही किया जाता था।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

लेकिन कुछ वैधों के नाम इस बही में बार–बार आते है इससे प्रतीत होता है कि यह वैध अन्य वैधों की तुलना में अधिक निपुण थे बही में उल्लेख मिलता है कि जब मांजी श्री जाड़ेची के स्वास्थ्य में अधिक सुधार नही हो रहा था तब निबांज से वैध अबदुल हकीम जी को बुलाया गया। इसी तरह पड़दायतो के ईलाज हेतु वैध भूरचंद जी के नाम उल्लेख बही में बार–बार मिलता है।

यह वैध पिढ़ी दर पीढ़ी इन्हीं जनाना सरदारों की सेवा करते थे। इन वैधो को जनानी ड्योढ़ी में पूरी ईज्जत के साथ लाया व ईलाज के बाद उचित ईनाम देकर राजकीय कर्मचारियों द्वारा वापिस घर छोड़ा जाता था।

बही में उल्लेख मिलता है कि यदि किसी दुसरे राज्य से या किसी नये वैध को जब ईलाज के बुलाया जाता था तो जानाना सरदारों की सुरक्षा का ध्यान रखते हुए उस वैध के जनाना ड्योढ़ी में प्रवेष करते ही ऑखो पर पट्टी बॉध दी जाती थी और ईलाज के बाद ही ऑखों पर लगी पट्टी हटाकर उसे उचित पारिश्रमिक देकर विदा किया जाता था। उदाहरण के तौर पर जब चिमनषाह ईलाज के लिए जनानी ड्योढ़ी में आये तो उसकी ऑख पर पट्टी बांधी गयी थी।

बही के अध्ययन से पता चलता है कि केवल बीमार होने पर ही नही अपितु इन रानियों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए अपितु इन रानियों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए समय–समय इनका रेगुलर चैकअप किया जाता है उदाहरण के तौर पर बही में उल्लेख मिलता है कि वैध भुरजी रानियों की नाड़ी देखने के लिए आये तब मांजी श्री जाडेचीजी, माजी श्री बागेलीजी, माजी श्री चौथा चवाण जी, पड़दायत आसरायजी, पड़दायत नवल रायजी पड़दायत हुलेरायजी ने अपनी नाड़ी दिखायी।

ईलाज के दौरान भी जमानी ड्योढ़ी के नियम कायदे व सुरक्षा का पुरा ध्यान रखा जाता था इस बात का ध्यान रखा जाता था कि पधारे वैध उचित वैषभुषा व सर को ढककर आये हो जब वैध भुरजी रानियों के ईलाज के लिए आये तो ढोढ़ीदार साखंल बखतावर के मार्फत नाजर कीसनराम के साथ जनानी ड्योढ़ी में ईलाज के लिए अन्दर गये। रानियों की सुरक्षा की दृष्टि से पुरे ईलाज के दौरान नाजर वैध के साथ ही रहते थे।

क्योंकि यह बही एक डैली रिर्पोट की तरह तैयार की गयी। इसलिए इसमें किसी रानी के बीमार होने के उल्लेख के साथ अगले दिन उसकी तबियत में किस प्रकार का सुधार हुआ का भी पुरा उल्लेख मिलता है।

इस बही में रानियों की बीमारी के साथ ही जनानी ड्योढ़ी में मनाये जाने वाले विभिन्न उत्सवों व त्यौहारों का भी उल्लेख मिलता है। जनानी ड्योढ़ी में किस त्यौहार विषेष पर यदि कोई रानी बीमार है तो किस प्रकार बीमारी के दौरान उस समारोह में शरीक हुई का भी उल्लेख हमें देखने को मिलता है। उदाहरण के तौर पर दषहरे के त्यौहार पर राणीजी श्री पंवार जी सा के बुखार होने पर इस त्यौहार में शरीक होने के लिए जहॉ बाकी सभी जनाना सरदार पैदल पधारे वही 'पंवार जी' पीगंस में बैठकर इस त्यौहार में शरीक होने के लिए गयी।

बही में यह भी उल्लेख किया गया है कि इन रानियों के बीमार होने पर इनकी तबीयत पुछने महाराज स्वंय जनानी ड्योढ़ी में पधारते थे। उदाहरण के तौर पर माजी श्री जाडेचीजी के बुखार होने पर महाराज श्री जीवण सीधजी कीले पधारे और माजी

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

सा की खुषी पुछी वह जनानी ड्योढ़ी में कीतनी देर रूके इसका भी वर्णन बही में मिलता है।

आधुनिक इतिहास लेखन में यह बही बड़ी ही उपयोगी सिद्ध हो सकती है क्योंकि इस बही के द्वारा हमें तत्कालीन शासक उनकी रानियॉ, प्रशासनिक अधिकारी जैसे नाजर ढोढ़ीदार जनानी ड्यौढ़ी में नियुक्त विभिन्न राजकीय कर्मचारी आदि के उल्लेख के साथ ही उस समय मनाये जाने वाले विभिन्न त्यौहार, उत्सव तत्कालीन समय के नियम कायदे आदि के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

[1]. महकमां री जनाना डोढ़ी–नित हकीकत की बही क्रमांक 2670 (महाराजा जसवन्त सिंह के समय वि. सं. 1950 के सावण वद 1 से लगाकर 1952 के फाल्गुण सुद 15 तक)

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501